International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 405-407

वाल्मीकि रामायण में काव्यशास्त्रीय तत्व

प्रवीण शर्मा
शोधछात्र, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तवना

वाल्मीकि रामायण में महर्षि वाल्मीकि की अप्रतिम काव्यप्रतिभा के दर्शन होते हैं। इस अध्याय में सुन्दरकाण्ड के काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का विवेचन किया गया है। अतः सबसे पहले यह विचारणीय है कि काव्य क्या है? मम्मटभट्ट काव्य का लक्षण इस प्रकार रखते हैं –

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि[1]

आचार्य विश्वनाथ के मत में – 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'[2] ही काव्य है। ध्वनिकार आनन्दवर्धनाचार्य ध्वनि को ही काव्य का प्राणभूत तत्त्व मानकर कहते हैं – 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य'[3]। वामन रीति को ही काव्य का प्रण मानते हैं 'रीतिरात्मा काव्यस्य'[4]। क्षेमेन्द्र औचित्य को ही काव्य का प्राण मानते हैं।[5] आचार्य क्षेमेन्द्र इस विषय में कहते हैं – औचित्यं र ससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम् आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति को ही काव्य का सार स्वीकार करते हैं।[6] इस पर उनका कथन है –

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि[7]
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि

इस प्रकार सारतः काव्य शास्त्र के कुछ तत्त्व हमारे सामने उपस्थित होते हैं। 1. रस, 2. गुण, 3. अलङ्कार, 4. अदोषता, 5. रीति इत्यादि। यद्यपि आचार्य मम्मट व अन्य काव्यशास्त्रीय आचार्यों ने छन्दशास्त्र का परिगणन काव्य में नहीं किया है किन्तु विषय की आवश्यकता को अनुभूत करते हुए शोधार्थी ने छन्दशास्त्र का भी इस अध्याय में समावेश किया है। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड की समीक्षा इस अध्याय का विषयभूत तत्त्व है। सुन्दरकाण्ड का काव्य शिल्प आदि काल का है। इसमें परवर्ती प्रवृत्तियाँ दिखाई नहीं देती हैं। मम्मट भट्ट ने काव्य के तीन भेद माने हैं।[8] रामायण के सुन्दर काण्ड का काव्य प्रायः अधम भेद का है जिसे चित्र काव्य भी कहा जाता है।[9] जिसका लक्षण मम्मट ने इस प्रकार कहा है –

''शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।[10]

मम्मट ने चित्र काव्य को गुणालङ्कार से युक्त माना है।[11] सुन्दर काण्ड का सारा विषय ही वर्णनापरक है। शोधावधि में अन्य काव्य भेदों के प्रयोग के साक्ष्य नहीं मिले हैं। इसके उपरान्त रस निरूपण काव्यशास्त्र का विषय है। रस काव्य का सार–भूत तत्त्व है[12] मम्मट भट्ट ने विभावादि के द्वारा व्यक्त होने वाला तत्त्व रस माना है। यथा ''व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावोरसः स्मृतः।'' इसी प्रकार काव्यनुशासन–कारने भी ''विभावानुभावयभिचारीभिरभिव्यक्तः स्थायीभवों रसः[13]।'' कह कर रस का स्वरूप बतलाया है। साहित्यदर्पणकार ने भी रस को ही काव्य की आत्मा माना है।[14] 'रस्यते इति रसः'[15] व्युत्पत्ति को रसस्वरूप प्रतिपादन में आचार्य ने आव्श्यक माना है। मम्मट ने रस के आठ भेद माने हैं।[16] साहित्यदर्पणकार नवम् रस की स्वीकार करते हैं।[17] इनका परिगणन मम्मट ने इस प्रकार किया है –

शृङ्गैरहास्यकरूणरौद्रववीरभयानकाः[18]
विभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्सष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः

विश्वनाथ ने शांत को नवम् रस माना है। सबसे पहले शृंङ्गार रस का विवेचन दर्शनीय है। मम्मट ने शृङ्कार के दो भेद माने हैं। 1. सम्भोग, 2. विप्रलम्भ[19] सम्भोग शृंगार का वर्णन सुन्दर काण्ड में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। हनुमन् जब लङ्का में जाते हैं। तब चन्द्रमा का वर्णन सम्भोग शृङ्गार का उत्तम निदर्शन है। उस प्रसङ्ग का निम्न श्लोक विशेषतः दर्शनीय है –

निनष्टशीताम्बुतुषारपङ्को महाग्रहग्राहनिष्टपङ्कः[20]
प्रकाशलक्ष्म्याश्रयनिर्मलाङ्को रराज चन्द्रो भगवा×छशाङ्कः

इसी प्रकार लङ्का में राक्षस–स्त्रियों के वर्णन में भी वाल्मीकि ने अपने संभोग शृङ्गार के कौशल का विशेष परिचय है। इसी प्रसंग के कुछ श्लोक दर्शनीय हैं –

'स्त्रियो ज्वलन्तीस्त्रपयोपगूढा निशीथकाले रमणोपगूढाः[21]
ददर्श काश्चित्प्रमदोपगूढा यथा विहङ्गाविहगोपगूढा।

यहाँ पर कवि ने सम्भोग को नया आयाम दिया है। पक्षियों के क्रियाकलापों से सम्भोग जैसे विशिष्ट विषय को भी वाल्मीकि ने बड़े सहज रूप में प्रकट किया है। पुष्पक विमान के वर्णन ने शृङ्गार वैभव का वाल्मीकि ने उत्तम निदर्शन दिया। इस प्रसङ्ग के कुछ श्लोक विवेचनीय हैं।

''कृताक्ष्यवैदूर्यमया विहङ्गा रूप्यप्रवालैश्च तथा विहङगा
चित्राश्चनानावसुभिर्भुजङ्गा जात्यानुरूपास्तुरगाः शुभांगाः''

इस श्लोक में वाल्मीकि ने पुष्पक विमान के उपर की गई चित्रकारी व पच्चीकारी का सर्ज्ञाव वर्णन किया है मानों विभिन्न मणियों से युक्त तथा अनेक पशुओं व पक्षियों के चित्रों से सज्जित पुष्पक विमान साक्षात्कामदेव का रूप धारण कर अध्येता के समक्ष दृश्यमान हो गया है।

आद्यकवि जितने सम्भोग में निपुण हैं उतने ही विप्रलम्भ में भी

सिद्धहस्त हैं। राम के वियोग में स्थिर सीता का वर्णन इस बात का प्रमाण हे इस प्रसङ्ग का यह श्लोक विशेष रूप से विवेच्य है –

एकयादीर्घयावेण्या शोभायमानायामयत्नतः[22]
नीलया नीरदापाये वनराज्ये महीमिव

एक वेणी का अभिप्राय इतना ही दीख पड़ता है कि इतने दिनों से बाल संवारकर दूसरी चोटी डाली ही नहीं गयी। सिर्फ एक बेणी थी। बालों का जूड़ा तक नहीं था। केश संवारती हुई कंघी चोटी स्त्रियां स्वयं ही करती हैं। पर चोटी डालने के लिए कंघी की आवश्यकता थी। पर रावण के यहां से कोई भी सौन्दर्य प्रसाधन सीता को स्वीकार्य नहीं था। इसी कारण पहले दिन जो चोटी की सीता ने वही रख दी।[23] यह विप्रलम्भ श्रृङ्गार में भी गाम का उदाहरण है। हास्य रस हनुमान के द्वारा राक्षसों को मारने व अशोक वाटिका को उजाड़ने ने प्रकरणगत रूप से स्फुट होता है। वीर रस प्रकरणतः सुन्दर काण्ड में दिखाई देता है। इसके कतिपय उदाहरण दर्शनीय हैं। यथा लङ्का में जाते हुए हनुमान् को देखकर विद्याधरिया कहती हैं कि –

दुधुवे च स रामाणि चकम्पे चानलोपयः[24]
ननाद च यहानादं स्त्रुमहानिव तोयदः।

हनुमान् के महानाद से वीरों के भी रोए खड़े हो गए। तब सुकोमल विद्याधरियों की बात ही क्या थी। अद्भुत रस कै प्रदर्शन में वाल्मीकि विशेष सिद्धहस्त हैं। यथा –

सुपुष्पितागैर्बहुभिः पादैरन्वितः कपिः[25]
हनुमान् पर्वताकारों बभूवाद्भुतदर्शनः

इसी श्लोक में मम्मट के द्वारा बताया गया। रस की स्वशब्दवाच्यता दोष भी दृष्टिगोचर होता है। जिसे मम्मट ने इस प्रकार स्पष्ट किया है –

'व्यभिचारिरसस्सायिभावानां शब्दवाच्यता'[26]

इस श्लोक में अद्भुत रस का स्वशब्द से उच्चारण किया है जो कि दोष है। अन्य रसों की सुष्पष्ट स्थिति शोधावधि में देखने में नहीं आयी गुणों की दृष्टि से सुन्दर काण्ड उत्तम रचना है। आचार्य मम्मट ने तीन गुण माने हैं।[27] माधुर्य, ओज तथा प्रसाद। आचार्य भट्ट वामन गुणों की संख्या दश मानते हैं।[28] माधुर्य का लक्षण मम्मट इस प्रकार करते हैं –

आह्लादकत्वं माधुर्यं श्रृङ्गारे द्रुतिकारणम्[29]

यह गुण आह्लादक व श्रृङ्गार रस प्रचुर मात्रा में होते हुए भी पूर्णतया स्फुट नहीं है। इसके बाद मम्मट ने माधुर्य स्गुण की विभिन्न रस में स्थिति बताई है –

करूणेविप्रलम्भे तच्छन्ति चातिशयान्वितम्।[30]
इसका एक सुन्दर उदाहरण विवेच्य है।

एकया दीर्घया वेण्या शोभायमानायामयत्नतः[31]
नीलया नीरदापाये वनराज्ये महीमिव

अब ओज गुण का विवेचन करते हैं। मम्मट ने ओज गुण का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है

दीप्त्रात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति[32]

यह गुण चित्त में दीप्ति का विस्तार करता है। इसके बाद मम्मट रसों में इसकी स्थिति बताते हुए कहते हैं – 'वीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च[33] अर्थात् इस रस की स्थिति वीभत्स व रौद्र रस में क्रमशः वृद्धयमान स्वरूप में होती है। इस प्रसङ्ग में यह श्लोक दर्शनीय है –

तावुभौ नरशार्दूलौ त्वद्दर्शनकृतीत्सवौ[34]
विचिन्वन्तौ महीं कृत्सनामस्माभिः सह सङ्गतौ।

ओज गुण के व्य×जक वर्णों का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मम्मट लिखते हैं कि वर्ग का पहला वर्ण तीसरे वर्ण के साथ साम×जस्य बनाए तो ओज गुण है।[35] यहाँ 'त्वद् दर्शनकृतोत्सवौ' में तकार व दकार का साम×जस्य होने से ओजगुण है।
शेषतः सभी काव्यों में प्रसाद गुण की प्रकृति होती है। जिसका स्वरूप मम्मट ने इस प्रकार स्पष्ट किया है –

'श्रुतिमात्रेव शब्दात्तु येनार्थप्रत्ययो भवेत्[36]
साधारणः समग्राणां स प्रसादो गुणों मतः।'

वह गुण सामान्यतः सभी रसों में पाया जाता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है –

स निकामं विमानेषु विचरन्कामरूपधृक्[37]
विचाकर्पिलङ्कां लाधवेन समन्वितः

इसके बाद अलङ्कार विवेचनीय हैं। वाल्मीकि ने सब से ज्यादा उपमा अलङ्कार का प्रयोग किया है। वाल्मीकि ने कुल 320 बार उपमा अलङ्कार का प्रयोग किया है। जिनका सभी का विवेचन सम्भव नहीं है। मम्मट ने उपमा का स्वरूप इस तरह बतलाया है – 'साधर्म्यमुपमा भेदे[38]। अर्थात् उपमान व उपमेय भेद रहते साधर्म्य ही उपमा है। इसके सुन्दर काण्ड में प्राप्त होने वाले कतिपय उदाहरण निम्न हैं।

द्विजान् वित्रासयन्धीयानुरसा पादपान्हरन्[39]
मृगांश्च सबहून्निघ्नन्द्रवृद्ध इस केसरी

इस श्लोक में वाल्मीकि ने हनुमान् की तुलना सिंह से की है। यह उपमेयलुप्तोपमा का भेद है। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक भी द्रष्टव्य है –
'कक्षान्तर्गतो वायुर्जीमूत इव गर्जति'[40] यह श्लोकांश पूर्णोपमा का उदाहरण है। इसमें उपमान वायु, उपमेय जीभूत, साधारण धर्म गर्जन तथा वाचक पद इव सभी तत्वों की उपस्थिति हैं इसी प्रकार अन्य उपमा के श्लोक भी विचारणीय हैं। इसके बाद सुन्दर काण्ड में सबसे ज्यादा श्लोक उत्प्रेक्षा अलङ्कार के मिलते हैं। जिसका स्परूप मम्मट ने इस प्रकार बताया है –
'सम्भावनामथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्' सुन्दर काण्ड में कुल 25 बार उत्प्रेक्षा अलङ्कार का प्रयोग किया गया हैं जिसके कतिपय

उदाहरण द्रष्टव्य है।

पिबन्निव बभौ चापि सोर्मिजालं महार्णवम[41]
पिपासुरिव चाकाशं ददृशे स्व महाकपिः

अर्थात् वह हनुमान् लहरों से युक्त सागर को पीता हुआ सा प्रतीत हुआ और प्यासे के समान आकाश में दीखने लगा। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक भी द्रष्टव्य है–

मेरूमन्दरसंकाशानुद्गतान्सुमहार्णवे।[42]
अत्यक्रामन्यमहावेगस्तरङ्गान्गणयन्निव

अर्थात् बड़े वेग वाला हव महार्णव में उत्पन्न मेरू मन्दिर के समान तरङ्गो को गिनता हुआ स कूदने लगा।
इसी प्रकार उत्प्रेक्षा अलङ्कार के अन्य उदाहरण भी विवेच्य हैं। संसृष्टि अलङ्कार के कुल दो श्लोकों का प्रयोग वाल्मीकि ने किया है सुन्दर काण्ड में संस्कृत–वाङ्मय में छन्दों का अपना विशिष्ट महत्त्व है। शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और व्याकरण नामक छः वेदाङ्गों में छन्द को वेदपुरुष का पाद अर्थात् चरण कहा गया है – 'छन्दः पादौ तु वेदस्य'[43]। इसका अभिप्राय यह है कि छन्द वेद को गति प्रदान करते हैं। वैदिक–साहित्य के साथ ही लौकिक साहित्य में भी छन्द का वैशिष्ट्य सर्वमान्य है।

संदर्भ सूची

1. काव्यशास्त्र, स्वरूप निरूपण भाग, पृ. 10
2. साहित्य दर्पणः
3. आनन्द –
4. वामन
5. औचित्य विचार चर्चा श्लोक 5
6. वक्रोक्तिजीवितम् (पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय) भूमिका, पृ. 12
7. वही, श्लोक सं. सात
8. काव्यप्रकाश काव्यभेद प्रकरण।
9. काव्य प्रकाश भूमिका भाग
10. वही, श्लोक 5
11. काव्य प्रकाश (सत्यव्रत सिंह), पृ. 17
12. साहित्य दर्पणः
13. काव्यनुशासनं 2–1
14. साहित्य दर्पण, पृ. 16
15. वही, पृ. 16
16. काव्यप्रकाश श्लोक 29
17. साहित्य दर्पण, पृ. 106
18. काव्यप्रकाश श्लोक संख्या 29
19. काव्यप्रकाश (सत्यव्रत सिंह), पृ. 84
20. वा.रा. सुन्दर काण्ड, 5/6
21. वा.श. सुन्दर काण्ड 5/18
22. वा.रा., सु.का. 19/19
23. वाल्मीकि रामायण खण्ड–6, पृ. 432
24. वा.रा. सु.का. 5/32
25. वा.रा.सु.का 7/47
26. काव्यप्रकाश 7/60
27. वही 8/69
28. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति 3. 2–4
29. काव्यप्रकाश 8/68
30. काव्यप्रकाश 8/69
31. वा.रा.सु.का 19/19
32. काव्य प्रकाश 8/69
33. वही 8/70
34. वा.रा. सु.का. 35/23
35. काव्यप्रकाश 8/75
36. वही 8/76
37. वा.रा.सु.का. 6/1
38. काव्यप्रकाश 10/87
39. सु.का. 1/4
40. सु.का. 9/62
41. सु.का. 9/55
42. सु.का. 9/70
43. पा.शि.